सिनेमा, साहित्य और समाज

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य और सिनेमा दोनों ही समाज रूपी सिक्के के दो पहलू हैं। इनके बिना समाज की भावना एवं संवेदनाओं का कोई मूल्य निर्धारित नहीं हो सकता। इसमें सामाजिक गतिविधियों और क्रियाकलापों के प्रतिबिंब होते हैं। भारत की पहली फिल्म 'सत्य हरिश्चन्द्र' देखकर बालक मोहनदास करमचंद गांधी रो पड़े थे और 'राजा हरिश्चंद्र' की सत्यनिष्ठा से प्रेरित होकर उन्होंने आजीवन सत्य बोलने का व्रत लिया था। वास्तव में इस फिल्म ने ही उन्हें मोहनदास से महात्मा गांधी बनने की दिशा में पहला कदम रखने हेतु प्रेरित किया था। सिनेमा ने समय-समय पर समाज को नया मोड़ देने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। साहित्य ने भी समाज के इस महत्त्वपूर्ण दृश्य-श्रव्य माध्यम में अपना योगदान किया है।

सिनेमा और साहित्य, समाज में घटित घटनाओं और जीवन का एक आईना होता है। प्रारंभिक दौर की फिल्में धार्मिक ग्रंथों की कथाओं का अंकन थीं। 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'भक्त प्रह्लाद', 'लंका दहन', 'कालिय मर्दन', 'अयोध्या का राजा' जैसी फिल्मों का धार्मिक और आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक उद्देश्य भी था। फिल्मों में सामाजिक समस्याओं को महसूस किया जाने लगा और 'किसान कन्या', 'मिर्जा ग़ालिब'जैसी फिल्में आई| ख्वाजा अहमद अब्बास, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, मनोहरश्याम जोशी, अमृतलाल नागर, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, रामवृक्ष बेनीपुरी, भगवतीचरण वर्मा, राही मासूम रज़ा, सुरेन्द्र वर्मा, नीरज, नरेन्द्र शर्मा, कवि प्रदीप, हरिवंशराय बच्चन, कैफी आज़मी, शैलेन्द्र, मज़रूह सुल्तानपुरी, शकील बदायूँनी इत्यादि ने भी समय-समय पर हिन्दी सिनेमा में किसी न किसी रूप में साहित्य की आत्मा डालने की कोशिशें की। प्रेमचन्द की कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' पर सत्यजीत रे ने इसी नाम से फिल्म बनाई, जो वैश्विक स्तर पर सराही गई।

किसी भी राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी उसके साहित्य से प्राप्त होती है| साहित्य लोकजीवन का अभिन्न अंग है। किसी भी काल के साहित्य से उस समय की परिस्थितियों, जनमानस के रहन-सहन, खान-पान व अन्य गतिविधियों का पता चलता है। समाज साहित्य को प्रभावित करता है और साहित्य समाज पर प्रभाव डालता है। साहित्य का समाज से वही संबंध है, जो संबंध आत्मा का शरीर से होता है| साहित्य समाज रूपी शरीर की आत्मा है साहित्य अजर-अमर है| साहित्य का विकसित रूप ही आज सिनेमा के नाम से जाना जाता है। साहित्य की प्रत्येक विधा को आत्मसात करने में सक्षम और सामाजिक पर सीधे और शीघ्र प्रभाव उत्पन्न करने के गुणों के परिणामस्वरूप ही सिनेमा की साहित्य अध्ययन में उपादेयता स्वतः स्पष्ट होती है। अतः साहित्य के शोधकार्य में सिनेमा को सम्मिलित करना न केवल अधिक समीचीन एवं सार्थक है बल्कि यह साहित्यिक शोध के लिए नवीन मार्ग प्रशस्त करेगा।

हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय में आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्टी का प्रमुख उद्देश्य साहित्य को सिनेमा से जोड़ते हुए समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को रेखांकित करना है|

प्रस्तावित विषय

सिनेमा, साहित्य और समाज का अन्तर्सम्बन्ध
सिनेमा और साहित्य
सिनेमा और आधी दुनिया
सिनेमा और दलित समाज
सिनेमा और आदिवासी
सिनेमा और भारतीय किसान
सिनेमा और समाज परिवर्तन की प्रक्रिया
सिनेमा, साहित्य और पर्यावरण चेतना
सिनेमा और सामाजिक मुद्दे
सिनेमा, बाजार और साहित्य
सिनेमा, साहित्य और प्रेम
सिनेमा, साहित्य और श्रमिक
सिनेमा, साहित्य और युवा पीढ़ी
सिनेमा, साहित्य और निशक्त जन
सिनेमा, साहित्य और रंगमंच

यूजीसी की हिन्दी उन्नयन योजना के अंतर्गत आयोजित
राष्ट्रीय संगोष्ठी

सिनेमा, साहित्य और समाज

25-26 मार्च 2017

पंजीयन प्रपत्र

नाम ____________________

पद ____________________

संस्था ____________________

____

शोधपत्र का शीर्षक ____________________

____

पंजीयन शुल्क

- शिक्षक-₹800 • शोध छात्र व अन्य-₹500
- प्रतिभागी अपने रहने की व्यवस्था स्वयं करें।

आयोजन समिति

प्रो. अनिल जैन	डॉ. उर्वशी शर्मा
डॉ. करतार सिंह	डॉ. जगदीश गिरी
डॉ. श्रुति शर्मा	डॉ. गीता सामौर
डॉ. रेणु व्यास	डॉ. अर्जुन सिंह
डॉ. मंदाकिनी मीना	डॉ.विशाल विक्रम सिंह
डॉ. वीरेन्द्र सिंह	अनिता रानी
डॉ. कैलाश पँवार	वर्षा वर्मा
तारावती मीना	स्वाति शर्मा
सुंदरम शांडिल्य	

प्रेषक
डॉ विनोद शर्मा
संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग एवं
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर 302004
मो.9950997599 ई मेल vinoddr68@gmail.com

यूजीसी की हिन्दी उन्नयन योजना के अंतर्गत आयोजित
राष्ट्रीय संगोष्ठी
सिनेमा, साहित्य और समाज
25-26 मार्च 2017

प्रति,

बुक पोस्ट

यूजीसी की हिन्दी उन्नयन योजना के अंतर्गत आयोजित
राष्ट्रीय संगोष्ठी
सिनेमा, साहित्य और समाज
25-26 मार्च 2017

संयोजक

डॉ विनोद शर्मा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
मो.9950997599

आयोजन सचिव

डॉ मंदाकिनी मीणा
सहा. आचार्य, हिंदी विभाग

आयोजक
हिंदी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर - 302004